Programme outcomes

हिन्दी विभागः–

हिन्दी का पाठयक्रम इस तरह से बनाया गया है कि इसे पढकर विषय की विद्यार्थियों के लिये उपयोगिता इस प्रकार सिद्ध होती है।

1. समस्त सरकारी सेवाओं के लिये अनिवार्य विषय है।
2. देश एवं विदेश में अध्यापक (स्कूल शिक्षा) एवं प्राध्यापक (कालेज विश्वविद्यालय) का अवसर प्राप्त होता है।
3. आकाशवाणी एवं दूरदर्शन मे उद्घोषक समाचार वाचक का रोजगार मिलता है।
4. प्रिण्ट मीडिया एवं इलक्ट्रोनिक मीडिया में पत्रकार एवं संवाददाता का क्षेत्र चुनकर कैरियर बनता है ।
5. अधिकारी का पद प्राप्त हो सकता है ।
6. लेखक/साहित्यकार बनने का मार्ग खुलता है । (फिल्मी गीतकार इरशद कामिल हिन्दी साहित्य में एम.ए. है)
7. द्विभाषिया (हिन्दी एवं एक अन्य भाषा का ज्ञाता) का क्षेत्र भी है।
8. हिन्दी भाषा का ज्ञाता हिन्दी भाषा के समाचार पत्र में जनजागरूकता के स्थायी स्तम्भ का लेखक भी बनता है । हरिशंकर परसाई, जयप्रकाश चौकसे, एन रघुरामन।
9. सलाहकार प्रूफ रीडर , हिन्दी प्रूफ पढना ।
10. कंटेट राइटर–हिन्दी अनुवादक ।
11. कंटेट डवलपर ।
12. धारावाहिक लेखक ,संवाद लेखक , पटकथा लेखक , समीक्षक बनने की ओर अग्रसर हो सकता है ।
13. हिन्दी टाइपराइटिंग ,
14. एफ एम रेडियो में उदघोषक ,कार्यक्रम प्रस्तोता
15. पर्यटन क्षेत्र,
16. डाटा एन्ट्री सेन्टर ,
17. राजभाषा प्रचार ,प्रसार समीति के माध्यम से अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी प्रचारक ।

धर्मशास्त्र विभाग

1. धर्मशास्त्र विषय का अध्ययन करके विद्यार्थी सेना मे धर्मगुरू के पद के लिए उपयोगी है। महाविद्यालय के कई छात्रों का भारतीय सेना में धर्मगुरु के पद पर चयन हुआ है।
2. भाषा विज्ञ होकर अनुवादक बन सकते है ।
3. रेडियो एवं दूरदर्शन पर उदघोषक बन सकते है ।
4. समाचार पत्रों मे स्थासी स्तम्भ धर्म एवं व्यवहार के लेखक बन सकते है । महाविद्यालय के छात्र एवं अध्यापक समय समय पर अखबारों एवं न्यूज चैनल्स पर धार्मिक आयोजनों एवं व्रत त्यौहार सम्बन्धी चर्चाओं में सम्मिलित होते हैं।
5. समाज में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त होने वाले सभी संस्कारो को कराने वाले बन सकते है। धर्मशास्त्र के कई छात्र समाज में संस्कारों आदि का सम्पादन करवाते हैं।

6. जन्म एवं मृत्युपरान्त आशौच का निर्णय करने वाले एवं श्राद्ध कर्म को करवाना, या व्यक्ति का सुगति सोपान कराना। महाविद्यालय के उनेकछात्र उत्तरकर्म कार्य करवाने में सिद्धहस्त हैं।
7. धर्मशास्त्र विषय के अध्येता को व्यवहार विषय का ज्ञान यथा ऋणदान, निक्षेप,दाय, दाय के प्रकार दाय के अधिकारी कौन,स्त्रीधन उसके अधिकारी, सीमा विवाद , इस प्रकार कई विषयों के जानकार बन जाते है। भारतीय विधिवेत्ताओं को सहयोग करने में धर्मशास्त्र अध्येता सिद्धहस्त होते हैं।
8. धर्मशास्त्र में नैमित्तिक कर्म के आधार पर प्रायश्चित्त का भी विधान मिलता है। धर्मशास्त्र के छात्र इस कार्य में सिद्धहस्त होते हैं।
9. पंचांग में वर्णित तिथियों एवं व्रतोत्सव पर्वो के निर्णायक आश्रम व्यवस्था एवं वर्णव्यवस्था के अनुसार भारतीय संस्कृति के जानकार एवं युगानुरूप धर्मशास्त्रके अनुसार नियमो के या धर्म के जानकार बनते है ।

व्याकरण– शास्त्र

1. भाषा का शुद्ध एवं परिष्कृत ज्ञान कराना।
2. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में व्याकरण की अहं भूमिका।
3. समास ,संक्षिप्तीकरण , कारक ,सन्धि , प्रकृति– प्रत्ययो का ज्ञान कराना।
4. प्रशासनिक सेवाओं में भी उपयोगिता।
5. उच्चारण स्थानों के माध्यम से भाषा का शुद्धोच्चारण करवाना।
6. अनुवादक के रूप में योगदान।
7. पाण्डुलिपि के अध्ययन में सहायक ।
8. संस्कृत सम्भाषण कक्षा में योगदान ।
9. वर्तनी सम्बन्धित अशुद्धि संशोधन में महत्त्वपूर्ण योगदान
10. शिक्षक, प्राध्यापक के रूप में अध्यापन कार्य में योगदान ।
11. शब्द स्वरूप की सिद्धि एवं भाषा निर्माण में सहायक।
12. वैदिक कर्मकाण्ड हेतु शुद्धोच्चारण का ज्ञान ।
13. वैदिक एवं लौकिक शब्दो के ज्ञान में सहायक।

ENGLISH

1. लगभग सभी प्रतियोगी परीक्षाओं यथा – RPSC, **UPSC, BANK RAILWAYS आदि में अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है ।**
2. **अध्यापन व अकादमिक क्षेत्र में जा सकते हैं।**
3. **वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए छात्र अंग्रेजी डिग्री लेने के बाद (MULTI MEDIA CREATION –(IMAGES, AUDIO,VIDEO ANDTEXT) में कार्य कर सकते हैं।**
4. **विभिन्न DIGITAL MEDIA PLATFORMS के लिए अंग्रेजी के छात्र CONTENT CREATION कर सकते हैं ।**
5. **MARKETING MANAGER के रूप में कार्य कर सकते हैं।**
6. **TRANSLATER का काम कर सकते हैं ।**
7. **विविध क्षेत्र में CAREER बना सकते हैं ।**
8. **लेखक के रूप में CAREER बना सकते हैं । (WRITING , POETRY, FICTION, REWRITING, LITRARY, CLASSICS, TRANSLATING,LITERATURE)**
9. **अंग्रेजी समाचार पत्रों के लिए JOURNALISMमेंCAREER बना सकते हैं।**

10. **ENGLISHके साथ छात्र MARKETING ADVERTISING में भी CAREERबना सकते हैं।**

दर्शन शास्त्र

1– भारतीय दर्शन अध्ययन द्वारा विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करना ।
2– भारतीय दर्शन विषय की प्रतियोगी परीक्षा में सामान्य ज्ञान व विषय पत्र में उपयोगिता ।
3– शिक्षक/व्याख्याता/प्रशासनिक सेवा पदों के लिए चयन योग्य होना।
4– कथा वाचक होकर प्रतिष्ठा व धनार्जन प्राप्त करना।
5– योग आसन, प्राणायामादि द्वारा निरोग होना ।
6– योग उपाधि धारक को नौकरी व स्वयं का व्यवसाय प्राप्त होना ।

संस्कृत वाङ्मय

1. संस्कृत साहित्य को विस्तृतरूप में समझने हेतु उपयोगी ।
2. संस्कृत साहित्य के विविध आयामों का ज्ञान ।
3. भाषा शुद्धता हेतु उपयोगी।
4. संस्कृत व्याकरण काज्ञान ।
5. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु विषयगत ज्ञान ।
6. भारतीय धर्म अध्यात्म एवं संस्कृति की जानकारी हेतु ।
7. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के सामान्य ज्ञानवृद्धि हेतु सहायक ।
8. प्रशासनिक परीक्षाओं में संस्कृत वैकल्पिक विषय का विकल्प ।
9. नैतिक मूल्यों के संरक्षण हेतु आवश्यक ।
10. राष्ट्रिय भावना विश्व बन्धुत्व जैसे सार्वभौमिक भावोत्पत्ति में सहायक ।
11. गीता–रामायण–वेद–उपनिषद जैसे आध्यात्मिक चिन्तन के विषयगत जानकारी हेतु आवश्यक।
12. सेना में धर्मगुरू के रूप में कार्य हेतु उपयोगी ।
13. पाण्डुलिपि विज्ञानी के रूप में कार्य हेतु उपयोगी ।
14. संपादक के रूप में कार्य करने हेतु उपयोगी ।

न्यायदर्शन

1. संस्कृत के छात्रों को विभिन्न परम्परागत विषयों के अध्ययन में जटिल शब्दों का अवलोकन।
2. व्याकरण शास्त्र, साहित्यशास्त्रादि ग्रन्थों में विशेषरूप से शब्दशक्तियों का बोध।
3. प्रशासनिक सेवा, RPSC, UPSC की प्रतियोगी परीक्षाओं में दर्शन विषय की प्रमुखता।
4. न्याय दर्शन विषय को अध्ययन करने वाले छात्रों की नैसर्गिक न्याय परम्परा से बौद्धिक विकास।
5. न्याय दर्शन विषय में शास्त्री/आचार्य उत्तीर्ण छात्र विधि–परीक्षाओं में प्रविष्ट होने पर श्रेष्ठतम तर्कशक्ति का ज्ञान होना।
6. राजस्थान विधिक सेवा की परीक्षाओं में न्याय दर्शन विषय अध्ययन से प्रतियोगी परीक्षा की पूर्ण तैयारी होना।
7. पदार्थ, द्रव्यादि गुणधर्म–साधर्म्य–वैधर्म्य का समुचित ज्ञान होना।
8. वाद–प्रतिवाद के निराकरण हेतु प्रमाणादि का ज्ञान होना।

9. सृष्टि एवं प्रलय के लक्षण, उत्पत्ति विषयक ज्ञान होना।
10. अणु–परमाणु के लाभ–हानि–महदादि का पूर्णरूप से ज्ञान होना।

यजुर्वेद

संस्कृत पढ़ने वाले समस्त शास्त्री एवं आचार्य के छात्रों को रोजगार के अवसर निम्नरूप में प्राप्त हो सकते है :–

1. यह कि संस्कृत भाषा अपने आप में सुसंस्कृत, परिमार्जित एवं संस्कारित है, इसलिए सभी भाषाओं की जननी है।
2. यह कि आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श' में संस्कृत की महत्ता बतायी है – 'संस्कृत नाम दैवी वाग् अन्वाख्याता महिर्षिभिः – दण्डी''
3. यह कि संस्कृत भाषा का साहित्य आज भारतीयता का पर्याय है, कहा भी है – विना वेदं विना गीतं, विना रामायणीं कथाम्। विना कविं कालिदासं भारतं–भारतं न हि।।
4. यह कि जिस प्रकार शरीर में आत्मा का महत्त्व है, उसी प्रकार भाषाओं में संस्कृत का है।
5. यह कि शास्त्री एवं आचार्य के उत्तीर्ण छात्र यदि एक वर्षीय कर्मकाण्ड डिप्लोमा से उत्तीर्ण है, तो सेना में Junior Commission Officer(नायब सूबेदार) अथवा धर्मगुरु के पद पर चयन हो सकता है।
6. यह कि शास्त्री के साथ यदि STC उत्तीर्ण है, तो ऐसे अभ्यर्थी अध्यापक लेवल 1st व 2nd में वरीयता से चयनित हो सकते है।
7. यह कि यदि कोई शास्त्री+शिक्षा शास्त्री के साथ उत्तीर्ण है, तो अध्यापक ग्रेड 2nd में में वरीयता से चयन हो सकता है।
8. यह कि विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे R.P.S.C./U.P.S.C./Bank/Railway/S.S.C. आदि में योग्यतानुसार चयन सम्भव ळें ।
9. यह कि शास्त्री एवं आचार्य उत्तीर्ण छात्रों के लिए परम्परागत वेद, व्याकरण, साहित्य एवं ज्योतिष के चयन में (संस्कृत विभाग) वरीयता रहती हैं।
10. यह कि संस्कृत शिक्षा रोजगार परक है। समाज में जन्म से मृत्यु पर्यन्त संस्कारों की विधि पूर्वक सम्पन्न कराने के लिए कर्मकाण्डियों की आवश्यकता पड़ती है, जो वैदिकों से ही सम्भव है।
11. यह कि वेद, व्याकरण, साहित्य एवं ज्योतिष में आचार्य एवं शिक्षा शास्त्री होने पर स्कूल व्याख्याता के लिए पात्र है।
12. यह कि आचार्य एवं Ph.D. पूर्ण होने पर संस्कृत महाविद्यालय एवं सामान्य महाविद्यालय में भी सहायक आचार्य (Assistant Professor) के पद हेतु पात्र है।
13. यह कि आत्मा–परमात्मा को समझने के लिए भी संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है।
14. यह कि श्रौत एवं स्मार्त यज्ञों के सम्पादन के लिए भी संस्कृतनिष्ठ विद्वानों की आवश्यकता होती है, जो गुरु परम्परागत संस्कृत अध्ययन से ही सम्भव है।

15. यह कि शास्त्री–आचार्य के साथ–साथ अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर की डिग्री हो तो अन्य क्षेत्र में भी चयन सम्भव है।
16. यह कि इसके उच्चारण एवं लेखन में एकरूपता होती है, अर्थात् जो हम लिखते है, वहीं बोलते है, यही संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता है, जो विश्व की किसी भी भाषा में नहीं है।
17. यह कि संस्कृत भाषा व्याकरण एवं उच्चारण की दृष्टि से समृद्ध है। ऋषि–मुनियों ने अपनी कठिन साधना एवं तपस्या से विपुल साहित्य भण्डार को जीवित रखा है।
18. यह कि इसका सम्बन्ध मात्र भाषा ही तक नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति से भी है।
19. यह कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की उदात्त भावना संस्कृत में ही निहित है।
20. के लिए रोजगार के अवसर है।

ज्योतिष

1– ज्योतिष शास्त्र की स्नातकोत्तर कला एवं विद्यावाचस्पति के क्षेत्र में उपयोगिता ।

2– सिद्धान्त एवं गणित ज्योतिष कें द्वारा (ASTRONOUTS ,NASA) की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है और रोजगार के अवसर भी मिलते है ।

3– फलित ज्योतिष के द्वारा किसी भी (PRIVATE ,GOVERNMENT) सैक्टर में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

4– वृष्टि विज्ञान कें द्वारा हमें आगामी मौसम की जानकारी प्राप्त होती है ।

5 – MEDICAL ASTROLOGY में भी विभिन्न रोजगार के मार्ग खुलते हैं ।

6– ASTRONOMICAL SCIENCE खगोलीय ग्रह अनुसंधान मौसम का पूर्वानुमान कृषि क्षेत्र में व्यापक अनुसंधान ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से ही संभव है ।

7– ASTROPHYSICS खगोलीय भेतिकी खगोल विज्ञान का वह अंग है जिनके द्वारा ग्रहगति नक्षत्रों के विषय में ज्ञात होता है ।

8– हस्त रेखा PALMISTRY भी ज्योतिषशास्त्र का अंग है।

9– वास्तु शास्त्र के द्वारा भी विभिन्न भूमि के शुभ और अशुभ प्रभाव के विषय में पता चलता है।

10– शकुनशास्त्र भी ज्योतिष का एक अंग है।

राजनीति विज्ञान

1. विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं RPSC, UPSC, बैंक, रेलवे आदि में सामान्य ज्ञान के लिए उपयोगी।
2. वैश्वविक मामलों की समझ बढ़ाने में उपयोगी।

3. तार्किक विचारों के विकास तथा देश की विभिन्न समस्याओं के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका ।
4. नव - रोजगार सृजन में सहायक ।
5. सामाजिक - राजनैतिक विश्लेषण में सहायक ।
6. जीवन स्तर की गुणवत्ता राजनीति विकास में उपयोगी ।
7. सरकार की विभिन्न योजनाओं के निर्धारण में महती भूमिका ।
8. सरकार की नितियों के निर्धारण एवं विश्लेषण में सहायक ।
9. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उदारीकरण वैश्वीकरण में सहायक ।
10. मानव के कल्याण हेतु कार्यकर सके | इस हेतु नोबल पुरस्कार भी दिया जाता है, जो छात्र - छात्राओं को मानव कल्याण हेतु प्रेरित करता है ।

साहित्यशास्त्रविभाग:

संस्कृतभाषया न केवलं शिक्षणक्षेत्रे कर्मकाण्डक्षेत्रे च अवसर: प्रदीयते, अपितु संस्कृतभाषान्वितं शास्त्रमिदं विभिन्नेषु क्षेत्रेषु अवसरं यच्छति | साहित्यशास्त्राध्येतार: अधोलिखितेषु क्षेत्रेष्वसरं प्राप्तुं शक्नुवन्ति –

संस्कृतसाहित्यशिक्षणे संस्कृतज्ञानामेवाधिकार: | साहित्यशिक्षणक्षेत्रे छात्रा: अध्यापका:, प्राध्यापका:, योगशिक्षका:, आचार्याश्च अवसरं प्राप्नुवन्ति |
साम्प्रतिके काले प्रशासनिकक्षेत्रे संस्कृतविषय: गृहीतो वर्तते | अत: प्रशासनिकक्षेत्रेऽपि IAS, RAS, लिपिक: इत्यस्मिन् पदे साहित्यछात्रै: अवसर: प्राप्यते |
रक्षाक्षेत्रे आचार्योपाधिं प्राप्य धर्मोपदेशका: (धर्मगुरु:) भवितुं शक्नुवन्ति संस्कृतशास्त्रा- ध्येतार: |
विभिन्नासु संस्थास्वपि (BANK) संस्कृतछात्रेभ्य: भाषाधिकारीति पदं परिकल्पितं वर्तते|
विविधप्रतियोगिपरीक्षासु साहित्यशास्त्राध्येतार: बाहुल्येन साफल्यं प्राप्नुवन्ति |
संस्कृतसाहित्यस्य बहव: ग्रन्था: साम्प्रतिके कालेऽपि हस्तलिखिता: प्राप्यन्ते | अत: तेषां सम्पादने साहित्यशास्त्रविदभ्य: अवसर: प्रदीयते |
संस्कृतसाहित्यस्य छात्रा: सर्वकारीयेतरसंस्थास्वपि लेखकत्वेन अनुवादकत्वेन च पदं प्राप्नुवन्ति | अत: अत्रापि तेभ्य: अवसर: परिकल्पितो वर्तते |
राजस्थानप्रान्ते तदितरप्रान्तेऽपि देवस्थानविभागे प्राच्यविद्याप्रतिष्ठाने च संस्कृतज्ञेभ्यश्च: वृत्त्यात्मक: शोधसहायकापिरूपेण अवसर: प्रकल्प्यते |
संस्कृतसाहित्यस्याध्येतार: वर्तमानकाले वार्तावल्यामपि पदं प्राप्तुं शक्नुवन्ति |
संगीतक्षेत्रे शास्त्रीयसंगीतगायका: संगीतलेखका: च भवितुं शक्नुम: वयं संस्कृतसाहित्यछात्रा: |

साहित्यशास्त्रस्य मुख्यप्रयोजनमस्ति: पुरुषार्थचतुष्ट्यस्य प्राप्ति: | साहित्यशास्त्रज्ञा: धर्मार्थिकाममोक्षरूपपुरुषार्थचतुष्ट्यस्य फलं प्राप्नुवन्ति |

समाजे सद्भावं, स्नेहं, सरसता, आमोद-प्रमोदादिनां विकासाय संस्कृतसाहित्यस्यपूर्वं योगदानमस्ति |

(प्रो. भास्कर शर्मा)
प्राचार्य
राजकीय महाराज आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर